अध्याय–5

सेवानिवृत्त महिलाओं की विभिन्न समस्याएं

निःसन्देह, सेवानिवृत्त (अवकाष प्राप्त) व्यक्तियों को सामान्य व्यक्तियों की तुलना में दैनिक जीवन में कुछ अधिक ही समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उस समय वे स्वयं को और अधिक परेषान तथा असुरक्षित महसूस करते हैं जब उनकी आर्थिक सहायता करने वाला कोई न हो। सेवानिवृत्त व्यक्तियों की एक अन्य प्रमुख समस्या; जहॉ काम धन्धे के बिना खाली बैठे रहने की होती है; तो कुछ के सामने खाली समय के उपयोग व व्यतीत करने की समस्या भी उन्हें खलती (सालती) है; तो कुछ को मनोरंजन के साथ–साथ सुखी व स्वस्थ्य जीवन की अनवरतता की कामना एवं समुदाय के लोगों के साथ अन्तःक्रियाएं करने तथा स्वयं को सक्रिय बनाए रखने की समस्या सताती रहती है।

सिलावट सुधा एस[1] (1995) ने सेवानिवृत्त व्यक्तियों की समस्याओं का उल्लेख करते हुए लिखा है कि ऐसे व्यक्तियों में निराषा, आलस्य, अक्षमता, चिड़चिढ़ापन, खोईखोई एकाग्रप्रियता, सामंजस्य का अभाव, बात–बात पर उपदेष देना आदि लक्षण सामान्य बात है; जो कि वृद्धावस्था के षारीरिक तथा मानसिक लक्षण हैं। ऐसे व्यक्ति आत्म केन्द्रित, संवेदनषील, दुखी, निराषावादी, विशाद्मय और परिवार तथा बच्चों के भविश्य के प्रति चिन्तित रहते हैं; इसलिए अपना दैनिक तथा सामाजिक जीवन व्यवस्थित तथा सन्तुलित नहीं कर पाते हैं। इनकी प्रमुख समस्याओं में उपेक्षा की अनुभूति करना, मनोरंजन तथा समय व्यतीत करने की समस्या, परिवार तथा समुदाय के लोगों के साथ समायोजन (सामंजस्य) की समस्या, सम्पति के रख रखाव, देखभाल तथा सुरक्षा की समस्या एवं अपनी पारिवारिक सामाजिक प्रस्थिति ;श्ंउपसपंस – ैवबपंस ैजंजनेद्ध बनाए रखने सम्बन्धी समस्या इत्यादि सेवानिवृत्तों की प्रमुख समस्याएं हैं।

अग्रवाल मनोहर[2] (1990) ने अपने आनुभविक अध्ययन के आधार पर लिखा है कि सेवानिवृत्त व्यक्तियों की सेवानिवृत्ति के पष्चात् कमाऊ भूमिका में परिवर्तन हो जाने के कारण; उनके परिजन पहले की तुलना में उन्हें कम महत्व प्रदान करते हैं; उनके जीवन के अनुभवों का लाभ नहीं लेते; उनसे परामर्ष नहीं लेते; उनके वर्चस्व में कमी आ जाती है जिससे उनकी मानसिकता पर मनो–सामाजिक प्रभाव पड़ता है। आपने आगे लिखा है कि सेवानिवृत्त, व्यक्ति (अध्ययन में) मन से दुखी तथा बोझिल पाए गए हैं।

इन्स्टीट्यूट ऑफ सोसल वर्क दिल्ली[3] (1977) की एक सर्वेक्षण टीम द्वारा किए गए क्षेत्रीय सर्वेक्षण तथा उससे प्राप्त अनुभवाश्रित निश्कर्श इस प्रकार हैं–

(1) 37ः परिवारों में सेवानिवृत्त व्यक्तियों के प्रति उनके परिजनों के दृश्टिकोण उपेक्षापूर्ण पाए गए हैं।

(2) 42.5ः सर्वेक्षित सेवानिवृत्त पेंषन प्राप्तकर्ता; जो अपनी आवष्यकताओं की पूर्ति स्वयं ही कर लेते हैं; उनका परिवार में महत्व तथा सम्मान, अपेक्षाकृत अधिक पाया गया है।

(3) 36.5ः सेवानिवृत्तों की दिनचर्या सामान्य पायी गयी है; जो सेवानिवृत्त व्यक्ति परिवार घर से बाहर के कामकाजों में अपनी सामर्थ्य के अनुरूप हाथ भी बँटाते हैं।

(4) पेंषन के मिलने के सन्दर्भ में बताया गया कि पेंषन मिलने के लगभग एक सप्ताह पूर्व से उनकी आवभगत ;त्मेचमबजद्ध, देखरेख ;ब्तमद्ध तथा पूछ ;टंसनमद्ध अच्छी होती है; पेंषन मिलने के 10–15 दिन बाद पेंषन के पैसे समाप्त (खर्च) हो जाने के पष्चात परिजनों द्वारा उनके साथ अति उपेक्षापूर्ण तथा उदासीन व्यवहार किया जाना आरम्भ हो जाता है यह सिलसिला निरन्तर हर माह के अन्त तक जारी रहता है।

उपरोक्त साहित्य के पुनरावलोकन से यह स्पश्ट है कि सेवानिवृत्त व्यवहारिक धरातल पर सामंजस्य सम्बन्धी विभिन्न प्रकार की समस्याओं की अनुभूति करते हैं। षोधार्थिनी ने भी सर्वेक्षण काल में पाया है कि ''अधिक उम्र के, अर्थात् अधिक समय तक सेवाओं ;मतअपबमेद्ध में रहे सेवानिवृत्त व्यक्तियों को अधिक मनो–सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।'' निम्न तालिका 5(1) उक्त तथ्य 'सामंजस्य की समस्या' पर उनकी आयु के सापेक्ष संक्षिप्त प्रकाष डालती है–

तालिका नं0 5(1)ः आयु सापेक्ष सामंजस्य की समस्या

क्रम	न्यादर्षों की आयु (वर्शों में)	सूचनादाताओं की आवृत्तियाँ (अभिमत)				
		हाँ	नहीं	उदासीन	अनुत्तरित	योग (प्रतिषत)
1	61 वर्श से कम	10;100ण्00द्ध ;03ण्57द्ध	..;00ण्00द्ध ;00ण्00द्ध	04;03ण्33द्ध ;04ण्00द्ध	..;00ण्00द्ध ;00ण्00द्ध	14;100ण्00द्ध ;03ण्50द्ध
2	61–65 वर्श	08;66ण्67द्ध ;02ण्86द्ध	..;00ण्00द्ध ;00ण्00द्ध	04;33ण्33द्ध ;04ण्00द्ध	..;00ण्00द्ध ;00ण्00द्ध	12;100ण्00द्ध ;03ण्00द्ध
3	65–70 वर्श	16;57ण्14द्ध ;05ण्71द्ध	..;00ण्00द्ध ;00ण्00द्ध	12;42ण्86द्ध ;12ण्00द्ध	..;00ण्00द्ध ;00ण्00द्ध	28;100ण्00द्ध ;07ण्00द्ध
4	70 वर्श तथा अधिक	70;71ण्43द्ध ;25ण्00द्ध	08;08ण्16द्ध ;40ण्00द्ध	20;20ण्41द्ध ;20ण्00द्ध	..;00ण्00द्ध ;00ण्00द्ध	98;100ण्00द्ध ;24ण्50द्ध

	समस्त योग (प्रतिषत)	280;80ण्00द्ध ;100ण्00द्ध	20;5ण्00द्ध ;100ण्00द्ध	100;25ण्00द्ध ;100ण्00द्ध	..;00ण्00द्ध ;00ण्00द्ध	400;100ण्00द्ध ;100ण्00द्ध

(नोटः कोश्ठकों के अन्तर्गत प्रदर्षित ऑकड़े प्रतिषतता दर्षाते हैं)

प्रस्तुत तालिका 5(1) के प्राथमिक तथ्यों के विष्लेशण से स्पश्ट है कि यदि हम आयु सापेक्ष सामंजस्य की समस्या के सम्बन्ध में प्राप्त अभिमतों 'कॉलम हॉ' पर दृश्टिपात करें तो स्पश्ट होता है कि जैसे–जैसे सेवानिवृत्तों की आयु में वृद्धि होती गयी है; उनके सकारात्मक उत्तरों की प्रतिषतता में भी वृद्धि होती गयी है। इससे सुस्पश्ट है कि ''कम उम्र की सेवानिवृत्त महिलाओं की तुलना में, अधिक उम्र की सेवानिवृत्त महिलाओं को सेवानिवृत्त होने के पष्चात् परिवार में उनके सामंजस्य में अधिक तथा तरह–तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है।''

निम्न तालिका 5(2) न्यादर्षों की 'सेवानिवृत्ति के प्रकारों' के सापेक्ष सामंजस्य की समस्या' पर संक्षिप्त प्रकाष डालती है–

तालिका नं0 5(2): न्यादर्षों की सेवानिवृत्ति के प्रकार के सापेक्ष सामंजस्य की समस्या

क्रम	सेवानिवृत्ति का प्रकार	सूचनादाताओं के अभिमत (आवृत्तियाँ/प्रतिषत)/स्वीकारोक्तियाँ				
		हाँ	नहीं	उदासीन	अनुत्तरित	योग (प्रतिषत)
1	ऐच्छिक	66;57ण्39द्ध ;22ण्92द्ध	..;00ण्00द्ध ;00ण्00द्ध	45;39ण्13द्ध ;44ण्12द्ध	04;03ण्48द्ध ;100ण्00द्ध	115;100ण्00द्ध ;28ण्75द्ध
2	अनिवार्य	222;77ण्89द्ध ;77ण्08द्ध	06;02ण्11द्ध ;100ण्00द्ध	57;20ण्00द्ध ;55ण्88द्ध	..;00ण्00द्ध ;00ण्00द्ध	285;100ण्00द्ध ;71ण्25द्ध
	समस्त योग (प्रतिषत)	288;72ण्00द्ध ;100ण्00द्ध	06;01ण्50द्ध ;100ण्00द्ध	102;25ण्50द्ध ;100ण्00द्ध	04;01ण्00द्ध ;100ण्00द्ध	400;100ण्00द्ध ;100ण्00द्ध

(नोटः कोश्ठकों के अन्तर्गत प्रदर्षित ऑकड़े प्रतिषतता दर्षाते हैं)

प्रस्तुत तालिका 5(2) के प्राथमिक ऑकड़ों के विष्लेशण से स्पश्ट है कि सर्वेक्षित सभी 400 सेवानिवृत्त महिलाओं में से 288(72:) ने यह स्वीकार किया है कि सेवानिवृत्त होने पर उन्हें परिवार व समाज में लोगों के साथ सामंजस्य स्थापित करने में विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है जबकि 102(25.50:) ने इस सन्दर्भ में उदासीन अभिमत दर्षाए हैं तथा मात्र 6(1.50:) ने नकारात्मक उत्तर प्रदान किए हैं, और केवल 4(1:) सूचनादात्री इस प्रष्न पर अनुत्तरित पायी गयी हैं। प्राप्त आंकड़ों का ऊर्ध्वाधर विष्लेशण करने पर स्पश्ट है कि ''स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेने वाली महिलाओं की तुलना में अनिवार्य सेवानिवृत्ति प्राप्त

करने वाली महिलाओं को परिवार और समाज में सामाजिक सामंजस्य स्थापित करने में अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।'' (दृश्टब्यः तालिका 5(2) का 'हॉ' वाला कॉलम)

निम्न तालिका 5(3) अध्ययन की गयी सभी 400 सेवानिवृत्त महिला न्यादर्षों द्वारा विभिन्न तरह की सामाजिक समस्याएं अनुभव करने के विभिन्न पहलुओं पर सर्वेक्षण से प्राप्त प्राथमिक जानकारी सम्बन्धी तथ्यों पर संक्षिप्त प्रकाष डालती है कि वे दैनिक जीवन में सेवानिवृत्त होने के बाद से किस प्रकार की अनुभूतियॉ कर रही हैं?

तालिका नं0 5(3)ः सेवानिवृत्त महिला न्यादर्षों द्वारा अनुभूत सामाजिक समस्याएं

क्रम	सेवानिवृत्त महिलाओं द्वारा अनुभूत सामाजिक समस्याएं	न्यादर्षों के अभिमत (आवृत्तियाँ/प्रतिषत)				योग (प्रतिषत)
		हाँ	नहीं	उदासीन	अनुत्तरित	
1	एकाकीपन अनुभव करना	240 ;60ण्00द्ध	30 ;07ण्50द्ध	130 ;32ण्50द्ध	.. ;00ण्00द्ध	400 ;100ण्00द्ध
2	अलगाव की अनुभूति करना	276 ;69ण्00द्ध	.. ;00ण्00द्ध	112 ;28ण्00द्ध	12 ;03ण्00द्ध	400 ;100ण्00द्ध
3	अपनत्व की कमी की अनुभूति करना	332 ;83ण्00द्ध	24 ;06ण्00द्ध	44 ;11ण्00द्ध	.. ;00ण्00द्ध	400 ;100ण्00द्ध
4	परिजनों द्वारा अनदेखी/उपेक्षा की अनुभूति करना	360 ;90ण्00द्ध	04 ;01ण्00द्ध	36 ;09ण्00द्ध	.. ;00ण्00द्ध	400 ;100ण्00द्ध
5	परिजनों द्वारा उचित सम्मान न दिया जाना की अनुभूति करना	392 ;98ण्00द्ध	.. ;00ण्00द्ध	08 ;02ण्00द्ध	.. ;00ण्00द्ध	400 ;100ण्00द्ध
6	पारिवारिक सामाजिक गतिविधियों से पृथकता की अनुभूति करना	248 ;62ण्00द्ध	10 ;02ण्50द्ध	155 ;38ण्75द्ध	07 ;01ण्75द्ध	400 ;100ण्00द्ध
7	परिजनों द्वारा सामाजिक दूरी बनाने का अनुभव करना	300 ;75ण्00द्ध	16 ;04ण्00द्ध	184 ;46ण्00द्ध	.. ;00ण्00द्ध	400 ;100ण्00द्ध
8	परिवार की सत्ता व प्रभाव में कमी तथा अनुभवों का लाभ न लेना की अनुभूति करना	400 ;100ण्00द्ध	.. ;00ण्00द्ध	.. ;00ण्00द्ध	.. ;00ण्00द्ध	400 ;100ण्00द्ध
9	परिजनों के साथ अन्तःक्रियाओं में कमी की अनुभूति करना	332 ;83ण्00द्ध	20 ;05ण्00द्ध	30 ;07ण्50द्ध	18 ;04ण्50द्ध	400 ;100ण्00द्ध

10	पारिवारिक गतिविधियों के साथ लगाव पूर्ववत न होना की अनुभूति करना	340 ;85प्र00द्ध	.. ;00प्र00द्ध	60 ;15प्र00द्ध	.. ;00प्र00द्ध	400 ;100प्र00द्ध

(नोट– कोश्ठकों के अन्तर्गत प्रदर्षित ऑकड़े प्रतिषत प्रदर्षित करते हैं)

प्रसंगाधीन प्रस्तुत तालिका 5(3) के प्राथमिक तथ्यों के विष्लेशण से स्पश्ट है कि सेवानिवृत्त महिलाएं सेवानिवृत्ति के पष्चात् पारिवारिक तथा सामाजिक जीवन में भॉति–भॉति की समस्याओं की अनुभूतियॉ करती हैं। सर्वेक्षण काल में 60ः महिला न्यादर्षों ने एकाकीपन अनुभव करना, 69ः ने अलगाव की अनुभूति करना, 83ः ने अपनत्व में कमी की अनुभूति, 90ः ने परिजनों द्वारा अनदेखी/उपेक्षा करना, 98ः ने परिवार में उचित सम्मान न मिलना, 62ः ने सामाजिक गतिविधियों से पृथकता की अनुभूति करना, 75ः ने सामाजिक दूरी अनुभव करना, षत प्रतिषत ने सत्ता व प्रभाव में कमी आ जाना तथा उनके अनुभवों का लाभ न लेने की अनुभूति करना, 83ः ने परिजनों के साथ अन्तःक्रियाओं में कमी की अनुभूति करना, तथा 85ः ने पारिवारिक गतिविधियों के साथ लगाव पूर्ववत न रहना, स्वीकार किया है। यह सत्य है कि भौतिकवादी संस्कृति तथा आधुनिकता के दौर में सेवानिवृत्त को पृथकीकरण की समस्या से ग्रसित कर लिया है। आज नई पीढ़ी के व्यक्तियों के पास अपने बुजुर्गों से विचार विमर्ष करने, सलाह (परामर्ष) लेने, तथा उनकी इच्छाओं को जानने तक का समय नहीं है; ऐसी स्थिति में व्यक्ति की सोच तथा मनःस्थिति कैसी होगी? इसकी कल्पना सहज ही की जा सकती है। जो अपने सारे जीवन की पूॅजी को परिवार को दे चुका है या देना चाहता है; अपने ज्ञान, अपनी बौद्धिकता, अपने अनुभवों का लाभ भी देना चाहता है। प्रायः यह सहज ही कह दिया जाता है कि सेवानिवृत्त नई पीढ़ी के साथ सामंजस्य नहीं कर पाते; जिसके कारण उन्हें भॉति–भॉति की अनेकों समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस तथ्य की पुश्टि **पटेल षिर्षा**[4] के आनुभविक अध्ययन से भी होती है। इसी का तथ्यपरक निश्कर्श प्राप्त करना प्रस्तुत षोध की विशय वस्तु है।

''निस्सन्देह; भौतिकतावादी व आधुनिक संस्कृति के तीव्र परिवर्तनों के दौर में परिवार की संरचना तथा उसके प्रकार्यों में हो रहे परिवर्तनों के फलस्वरूप परिवार अनाथों, विधवाओं, विधुरों, सेवानिवृत्तों/वृद्धों की सुरक्षा, आदर भाव, सम्मान एवं सहायता का कार्य पूर्व की भाँति नहीं कर पा रहे हैं। यही कारण है कि आज सेवानिवृत्तों और परिवारीजनों के मध्य पारिवारिक प्रकार्यों के धरातल पर सफल सामंजस्य नहीं हो पा रहा है, और इन सेवानिवृत्त

(वृद्धों) का पारिवारिक जीवन दिन प्रतिदिन समस्याग्रस्त होता चला जा रहा है। अन्य कारण यह भी है कि आज वृद्धों/सेवानिवृत्तों को फालतू समझने की प्रवृत्ति परिजनों में निरन्तर बढ़ती ही जा रही है। इसलिए ये सेवानिवृत्त (वृद्ध) घबराने तथा चिन्तित होने लगे हैं।''[5]

अनुसंधित्सु ने ''पारिवारिक–सामाजिक सामंजस्य की समस्याएं'' अध्ययन करने के लिए न्यादर्ष में चयनित कुल 400 सेवानिवृत्त महिलाओं की पारिवारिक स्थिति तथा प्रकार्य आधारित विन्दुओं– (क) परिवार की संरचना (ढाँचा) (ख) सत्ता एवं प्रभाव (ग) परिवार में उनसे विचार विमर्ष करना तथा परामर्ष मानना (घ) परिवार के सदस्यों के साथ उनकी अन्तःक्रियाओं का स्वरूप (ड) उनकी दक्षता, बौद्धिकता तथा उनके सम्पूर्ण जीवन के ज्ञान भण्डार (अनुभवों) का लाभ न लेना तथा उनकी इच्छाएं जानने का प्रयास न करना (च) नवीन विचारधारा के परिजनों के साथ तालमेल न होना (छ) पेंषन से अपर्याप्त आय (ज) अलगाव तथा उपेक्षित अनुभव करना इत्यादि बिन्दुओं पर प्राथमिक तथ्य संकलित कर निश्कर्श उद्घाटित करने का प्रयास किया है। सर्वप्रथम सेवानिवृत्त महिलाओं की पारिवारिक स्थिति एवं परिवार से उनकी प्रत्याषाएं एवं पारिवारिक सामंजस्य हेतु उनके सुझावों को जानने का प्रयास किया गया है। सेवानिवृत्तों के परिवारों की संरचना के अन्तर्गत परिवार के स्वरूप (यथा– (1) अकेला पति या पत्नी (2) पति–पत्नी दोनों (3) पति अथवा पत्नी, अथवा पति पत्नी और उनके अविवाहित बच्चे (4) पति अथवा पत्नी, अथवा पति पत्नी तथा उनके विवाहित एवं अविवाहित बच्चे) के अनुसार सेवानिवृत्त महिलाओं के परिवारों की आवृत्तियाँ जानी गयी हैं। तत्पष्चात् पारिवारिक सामंजस्य सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन किया गया है। सर्वेक्षण से प्राप्त प्राथमिक तथ्यों पर सभी 400 न्यादर्ष सेवानिवृत्त महिलाओं के परिवारों की संरचना के अनुसार निम्न तालिका 5(4) संक्षिप्त प्रकाष डालती है–

तालिका नं0 5(4): सेवानिवृत्त महिलाओं के परिवारों की संरचना के सापेक्ष न्यादर्ष वितरण

क्रम	परिवार का स्वरूप/संरचना	आवृत्तियॉ	प्रतिषत
1	अकेला पति अथवा पत्नी	05	01.25
2	पति–पत्नी दोनों	82	20.50
3	पति अथवा पत्नी, अथवा पति–पत्नी तथा उनके अविवाहित बच्चे	152	38.00
4	पति अथवा पत्नी, अथवा पति–पत्नी तथा उनके विवाहित एवं अविवाहित बच्चे	161	40.25

	समस्त	400	100.00

अध्ययन की गयी सभी 400 न्यादर्ष सेवानिवृत्त महिलाओं के परिवारों की संरचना का विष्लेशण यह स्पश्ट करता है कि समग्र में से वर्तमान में 161(40.25:) परिवारों में पति अथवा पत्नी, अथवा पति–पत्नी तथा उनके विवाहित एवं अविवाहित बच्चे निवास कर रहे हैं, 152(38:) परिवारों में पति अथवा पत्नी, अथवा पति–पत्नी तथा उनके अविवाहित बच्चे रहते हैं, 82(20.50:) परिवारों में पति–पत्नी दोनों ही निवास करते हैं, मात्र 1.25: परिवारों में अकेला पति अथवा पत्नी निवास करती हैं सुस्पश्ट है कि आज भी परिवारों पर समश्टिवादी तथा सामूहिकता की भावनाएं प्रभावी हैं। निम्न तालिका 5(5) न्यादर्षों के परिवारों में सेवानिवृत्त महिलाओं की सत्ता एवं प्रभाव पर संक्षिप्त प्रकाष डालती है। उल्लेखनीय है कि भारतीय संयुक्त परिवार व्यवस्थान्तर्गत परिवार की सत्ता परिवार के बयोवृद्ध के हाथ में होती थी अर्थात् परिवार का वयोवृद्ध, परिवार का कर्ताधर्ता (मुखिया) होता था। परिवार के सभी सदस्यों के जीवन से सम्बन्धित समस्त निर्णय लेने का वही अधिकारी होता था किन्तु वर्तमान सन्दर्भों में वृद्धजनों की स्थिति में भौतिकतावादी व व्यक्तिवादी मूल्यों के फलस्वरूप काफी कुछ परिवर्तन दृश्टिगत हैं। परिवार की सत्ता वयोवृद्धों के हाथों से युवाओं; जो परिवार की उत्पादन प्रणाली में सक्रिय भूमिकाएं निभाते हैं; या फिर नौकरी में चले जाने से सत्ता उनकी महिलाओं के हाथों में हस्तान्तरित हो रही है। अतः प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत सेवानिवृत्त महिला न्यादर्षों की पारिवारिक स्थिति पर विचार करते हुए यह जानकारी प्राप्त करना आवष्यक समझा गया कि परिवार में उनकी सत्ता एवं प्रभाव आज भी सेवानिवृत्ति के फलस्वरूप पूर्ववत् है या सत्ता एवं प्रभाव में कुछ अन्तर आया है। निम्न तालिका 5(5) इस प्रसंग में सभी 400 सेवानिवृत्त महिला न्यादर्षों के अभिमतों पर संक्षिप्त प्रकाष डालती है–

तालिका नं0 5(5): परिवार की सत्ता एवं प्रभाव के सन्दर्भ में सेवानिवृत्त महिलाओं के अभिमत

क्रम	परिवार की सत्ता एवं प्रभाव	सेवानिवृत्त महिलाओं के प्रत्युत्तर / अभिमत (संख्या / प्रतिषत)	
		पूर्व में	वर्तमान में
1	स्वयं के हाथ में	352(88.00)	48(12.00)
2	अन्य सदस्य के हाथ में	48(12.00)	352(88.00)
	समस्त	400(100.00)	400(100.00)

प्रस्तुत तालिका 5(5) के प्राथमिक तथ्यों के विष्लेशण से स्पश्ट है कि अध्ययन की गई कुल 400 न्यादर्ष सेवानिवृत्त महिलाओं में से– पूर्व में 352(88:) सेवानिवृत्तों के स्वयं के हाथों में परिवार की सत्ता थी जो अब (वर्तमान में) 48(12:) सेवानिवृत्तों के हाथों में ही रह गयी है जबकि अन्य सदस्यों के हाथों में पूर्व में 48(12:) के परिवारों की सत्ता थी जो अब बढ़कर 352(88:) के हाथों में हस्तान्तरित हो गयी है। **निश्कर्शतः 'सेवानिवृत्ति के पष्चात् परिवार की सत्ता एवं प्रभाव उनके बच्चों को हस्तान्तरित हो रही है।'** पुनः पूरक प्रष्न सभी 400 सेवानिवृत्त महिला न्यादर्षों से पृथक–पृथक किया गया कि– ''क्या सत्ता परिवार के अन्य सदस्यों के हाथों में हस्तान्तरित होने से परिवार पर आपके प्रभाव में कोई कमी हुयी है?'' इस प्रसंग में किए गए आनुभविक अध्ययन से प्राप्त उत्तरों पर निम्न तालिका 5(6) संक्षिप्त प्रकाष डालती है–

तालिका नं0 5(6): ''क्या सत्ता परिवार के अन्य सदस्य के हाथ हस्तान्तरित होने से परिवार पर आपके प्रभाव में कोई कमी आयी है?'' –सेवानिवृत्त महिलाओं के प्रत्युत्तर

क्रम	सेवानिवृत्त महिला न्यादर्षों के प्रत्युत्तर	आवृत्तियॉ	प्रतिषत
1	हॉ	319	79.75
2	नहीं	05	01.25
3	उदासीन	68	17.00
4	अनुत्तरित	08	02.00
	समस्त	400	100.00

प्रस्तुत तालिका से स्पश्ट है कि अध्ययन की गयी कुल 400 सेवानिवृत्त महिला न्यादर्षों में से 79.75: सेवानिवृत्त महिलाओं ने यह स्वीकार किया है कि सत्ता परिवार के अन्य सदस्य के हाथ हस्तान्तरित हो जाने से परिवार पर उनके प्रभाव में कमी आयी है जिससे–

(1) मानसिक समस्याएं जनित हो रही हैं।

(2) परिवारों में युवाओं के प्रभाव बढ़े हैं जिससे उनका सम्मान घटा है।

(3) मानसिक रूप से परेषान होने के कारण सेवानिवृत्त महिलाओं के समक्ष पारिवारिक–सामाजिक सामंजस्य की समस्याएं उभरी हैं जिससे कि वे प्रायः तनावग्रस्त महसूस करती हैं।

षोधार्थिनी ने सेवानिवृत्त महिलाओं के परिवारों के सदस्यों के साथ पारिवारिक सम्बन्ध तथा अन्तःक्रियाओं के बारे में भी जानकारी करने का प्रयास किया है कि इनमें कोई परिवर्तन

तो नहीं हुआ है; अथवा सब कुछ पूर्ववत् व सामान्य है। सभी 400 सेवानिवृत्त महिला न्यादर्षों के अध्ययन से प्राप्त प्राथमिक तथ्यों पर निम्न तालिका 5(7) संक्षिप्त प्रकाष डालती है–

तालिका नं0 5(7): ''सेवानिवृत्त महिलाओं के साथ परिवार के सदस्यों के सम्बन्धों की प्रकति''

क्रम	सेवानिवृत्तों व पारिवारिक सदस्यों के मध्य परस्पर सम्बन्धों की प्रकृति	आवृत्तियॉ	प्रतिषत
1	पूर्ववत् तथा सामान्य	80	20.00
2	कुछ–कुछ परिवर्तित	96	24.00
3	स्पश्टतः परिवर्तित	224	56.00
	समस्त	400	100.00

प्रस्तुत तालिका के प्राथमिक तथ्यों के विष्लेशण से स्पश्ट है कि 80(20:) न्यादर्षों ने यह स्वीकार किया है कि उनके सम्बन्ध परिजनों के साथ पूर्ववत् एवं सामान्य हैं जबकि 96(24:) न्यादर्षों ने यह बताया है कि उनके सम्बन्ध अपने परिवार के सदस्यों के साथ कुछ–कुछ परिवर्तित हुए हैं। सर्वाधिक 224(56:) न्यादर्षों ने यह बताया कि परिवार के सदस्यों के साथ उनके सम्बन्ध स्पश्टतः परिवर्तित हुए हैं। निश्कर्शतः ''सेवानिवृत्त महिलाओं के अपने परिजनों के साथ सम्बन्ध परिवर्तित हो रहे हैं।'' निम्न तालिका 5(8) परिवार के सदस्यों के साथ सभी 400 सेवानिवृत्त महिला न्यादर्षों की अन्तःक्रियाएं तथा अन्तःक्रियाओं के परिवर्तित स्वरूपों को प्रदर्षित करती है–

तालिका नं0 5(8): सेवानिवृत्त महिलाओं तथा परिवार के सदस्यों के मध्य अन्तःक्रियाएं तथा अन्तःक्रियाओं के परिवर्ती स्वरूप

क्रम	अन्तःक्रियाओं का स्वरूप	आवृत्तियॉ	प्रतिषत
1	पूर्ववत् एवं सामान्य	73	18.25
2	कुछ–कुछ परिवर्तित	167	41.75
3	स्पश्टतः परिवर्तित	160	40.00
	समस्त	400	100.00

अध्ययन की गयी कुल 400 सेवानिवृत्त महिलाओं में से 73(18.25:) न्यादर्षों ने यह बताया कि उनकी एवं परिवार के सदस्यों के मध्य की जाने वाली अन्तःक्रियाएं पूर्ववत् एवं सामान्य हैं, 167(41.75:) न्यादर्षों ने यह स्वीकार किया है कि उनकी परिवार के सदस्यों के मध्य की जाने वाली अन्तःक्रियाएं सेवानिवृत्ति के बाद कुछ–कुछ परिवर्तित महसूस होती हैं जबकि 160(40:) न्यादर्षों ने स्वीकार किया है कि उनके एवं परिजनों के मध्य रिटायर होकर घर आने पर अन्तःक्रियाओं का स्वरूप स्पश्टतः परिवर्तित हुआ है। **इन प्राप्त तथ्यों के**

विष्लेशण के प्रकाष में निश्कर्शतः कहा जा सकता है कि 'सेवानिवृत्तों तथा उनके परिवारों के सदस्यों के मध्य की जाने वाली अन्तःक्रियाएं षनैः षनैः परिवर्तित हो रही हैं' जिसका कारण यह है कि सेवानिवृत्ति के फलस्वरूप उनकी कमाऊ भूमिका में बदलाव हुआ है, अस्तु परिवार के सदस्यों ने उनके साथ अपनी अन्तःक्रियाओं में भी परिवर्तन कर लिया है। लेकिन एक प्रष्न यह भी उठता है कि 'क्या सेवानिवृत्त महिला न्यादर्षों ने भी परिवार के सदस्यों की प्रतिक्रियाओं के फलस्वरूप अथवा स्वाभाविक तौर पर परिवार की गतिविधियों के साथ अपना लगाव यथावत् रखा है; अथवा उन्होंने भी लगाव कम कर लिया है?' इस सम्बन्ध में प्राप्त तथ्यों पर निम्न तालिका संक्षिप्त प्रकाष डालती है–

तालिका नं0 5(9): पारिवारिक गतिविधियॉ तथा लगाव का स्वरूप एवं सेवानिवृत्त महिला न्यादर्ष

क्रम	पारिवारिक गतिविधियॉ तथा लगाव	आवृत्तियॉ	प्रतिषत
1	पूर्ववत्	152	38.00
2	उदासीन	120	30.00
3	परिवर्तित	128	32.00
	समस्त	400	100.00

तालिका 5(9) के प्राथमिक तथ्यों के विष्लेशण से स्पश्ट है कि अध्ययन की गयी कुल 400 सेवानिवृत्त महिलाओं में से 152(38:) ने यह स्वीकार किया है कि उनके द्वारा की जाने वाली पारिवारिक उत्तरदायित्व निर्वाह सम्बन्धी गतिविधियॉ तथा लगाव यथावत्/पूर्ववत् हैं, 120(30:) न्यादर्षों ने पारिवारिक गतिविधियों तथा लगाव के प्रति उदासीनता बरतना स्वीकार किया है जबकि 128(32:) न्यादर्षों का मानना है कि परिवार के प्रति उनकी भी गतिविधियॉ तथा लगाव पूर्ववत् नहीं हैं बल्कि सेवानिवृत्ति के पष्चात् से कुछ बदलाव आ गया है जो स्वाभाविक है। जिसका मूल कारण उनकी परिजनों द्वारा रिटायरमेन्ट के बाद अनदेखी (उपेक्षा) किया जाना है।

तालिका नं0 5(10): सेवानिवृत्त महिलाएं तथा परिजनों के साथ सम्बन्धों की प्रकृति

क्रम	सेवानिवृत्त महिलाएं तथा परिजनों के साथ सम्बन्धों की प्रकृति	आवृत्तियॉ	प्रतिषत
1	सामान्य	108	27.00

2	उदासीन	80	20.00
3	सन्तोशजनक	56	14.00
4	असन्तोशजनक	156	39.00
	समस्त	400	100.00

प्रस्तुत तालिका से स्पश्ट है कि अध्ययन की गई कुल 400 सेवानिवृत्त महिला न्यादर्षों में से 108(27:) के अपने परिजनों के साथ सम्बन्ध सामान्य, 80(20:) के सम्बन्ध उदासीन, 56(14:) के सम्बन्ध सन्तोशजनक तथा 156(39:) सर्वाधिक न्यादर्षों ने असन्तोशजनक सम्बन्ध होना बताया है। **निश्कर्श है कि ''सेवानिवृत्त महिलाओं एवं उनके परिजनों के मध्य सम्बन्ध उदासीन, असन्तोशजनक तथा सामान्य पाए गए हैं।''**

तालिका नं0 5(11): पारिवारिक गतिविधियों एवं पारिवारिक सदस्यों से सेवानिवृत्त महिलाओं के लगाव

क्रम	पारिवारिक सदस्यों एवं पारिवारिक गतिविधियों से सेवानिवृत्त महिलाओं के लगाव	आवृत्तियॉ	प्रतिषत
1	पूर्ववत्/यथावत	208	52.00
2	उदासीन	32	08.00
3	पूर्ववत् नहीं	160	40.00
	समस्त	400	100.00

सर्वेक्षण से प्राप्त प्राथमिक तथ्यों के विष्लेशण से स्पश्ट है कि अध्ययन की गयी कुल 400 सेवानिवृत्त महिलाओं में से 208(52:) सूचनादात्री अपने परिवारों के सदस्यों तथा पारिवारिक गतिविधियों से यथावत/पूर्ववत् लगाव रखती हैं जबकि 160(40:) सेवानिवृत्तों का लगाव पूर्ववत् नहीं रहा है अर्थात् सेवानिवृत्ति हो जाने के कारण लगाव में परिवर्तन हो गया है। परन्तु 32(8:) सूचनादात्री परिवार के सदस्यों व पारिवारिक गतिविधियों के प्रति उदासीन देखी गयी हैं। तालिका नं0 5(8), 5(9), 5(10) तथा तालिका नं. 5(11) के तथ्यों के विष्लेशण के आलोक में निश्कर्श है कि **अधिकांषतः सेवानिवृत्तों के अपने परिवारों के साथ सम्बन्ध पूर्ववत् व सामान्य हैं; एक तिहाई (33:) सेवानिवृत्त कुछ–कुछ तथा दो तिहाई सेवानिवृत्त स्पश्ट परिवर्तन की अनुभूति करती हैं फिर भी परिजनों तथा पारिवारिक गतिविधियों से उनके लगाव पूर्ववत् हैं; उनके स्वभावों में कोई विषेश परिवर्तन दृश्टिगत नहीं हुआ है।** पुनः सभी

400 सेवानिवृत्तों से पूरक प्रष्न किए जाने पर कि ''क्या परिजन, आपकी दक्षता, बौद्धिकता तथा सम्पूर्ण जीवन के ज्ञान भण्डार (अनुभवों) का लाभ लेना चाहते हैं?'' सभी 400 सेवानिवृत्तों से प्राप्त व्यक्तिगत प्रत्युत्तरों पर निम्न तालिका 5(12) संक्षिप्त प्रकाष डालती है–

तालिका नं0 5(12): ''क्या परिजन आपकी दक्षता, बौद्धिकता तथा सम्पूर्ण जीवन के अनुभवों का लाभ लेना चाहते हैं?''– सेवानिवृत्तों के प्रत्युत्तर

क्रम	सेवानिवृत्तों के प्रत्युत्तर/अभिमत	आवृत्तियॉ	प्रतिषत
1	हॉ	132	33.00
2	नहीं	268	67.00
3	अनुत्तरित	––	00.00
	समस्त	400	100.00

अध्ययन की गयी कुल 400 सेवानिवृत्त महिलाओं में से 268(67:) अधिकॉषतः सेवानिवृत्तों ने यह बताया कि वे ऐसी अनुभूति करती हैं कि उनके परिजन उनकी दक्षता, बौद्धिकता तथा सम्पूर्ण जीवन के अनुभवों का लाभ लेना नहीं चाहते। जबकि मात्र 132(33:) ने ही स्वीकार किया है कि उनके परिजन उनकी दक्षता, बौद्धिकता तथा जीवन के अनुभवों का लाभ लेना चाहते हैं; सम्प्रति, अनायास उठ खड़ी होने वाली समस्याओं के सम्बन्ध में उनके परिजन यदाकदा उनसे विचार–विमर्ष करते हैं, तथा परामर्ष/सुझाव भी लेते हैं। **इन आनुभविक तथ्यों के विष्लेशण के आलोक में निश्कर्श है कि ''अधिकांषतः सेवानिवृत्तों के परिजन उनसे परामर्ष नहीं करते; और न ही उनकी दक्षता, बौद्धिकता एवं सम्पूर्ण जीवन के ज्ञान भण्डार (अनुभवों) का लाभ ही लेना चाहते हैं। इससे वे (सेवानिवृत्त महिलाएं) क्षुब्ध तथा कभी–कभी काफी दुःखी होती हैं।**

तालिका नं0 5(13): ''क्या आपके परिजन कभी आपकी इच्छाएं/आकॉंक्षाएं भी जानना चाहते हैं?'' सेवानिवृत्तों के प्रत्युत्तर/अभिमत

क्रम	सेवानिवृत्तों के प्रत्युत्तर	आवृत्तियॉ	प्रतिषत
1	हॉ	28	07.00
2	नहीं	280	70.00
3	उदासीन	88	22.00
4	अनुत्तरित	04	01.00
	समस्त	400	100.00

प्रस्तुत तालिका के प्राथमिक तथ्यों के विष्लेशण के प्रकाष में स्पश्ट है कि अध्ययन की गयी कुल 400 न्यादर्षों में से 280(70:) सर्वाधिक सेवानिवृत्तों ने यह बताया है कि उनके परिजन उनकी इच्छाएं/आकॉक्षाएं कभी भी नहीं पूछते, मात्र 28(7:) सेवानिवृत्तों के परिजन उनकी इच्छाओं/आकांक्षाओं पर ध्यान देते हैं जबकि 88(22:) सेवानिवृत्त इस प्रष्न का उदासीन उत्तर देने वाली पायी गयी हैं एवं केवल 4(1:) सेवानिवृत्त महिलाएं इस प्रष्न के उत्तरों पर अनुत्तरित रही हैं। **निश्कर्शतः सेवानिवृत्तों से उनके परिजन उनकी व्यक्तिगत इच्छाएं तथा आकॉक्षाएं जानना नहीं चाहते, इसी बजह से उनकी चिन्ताएं उत्तरोत्तर बढ़ रही हैं।** पुनः यह पूछे जाने पर कि ''इस सब का क्या कारण है?'' इस प्रसंग में सेवानिवृत्त महिलाओं ने जो भावनाएं, उद्गार तथा अनुभूतियॉ स्पश्ट की हैं उन पर निम्न तालिका 5(14) संक्षिप्त प्रकाष डालती है–

तालिका नं0 5(14): पारिवारिक सामाजिक सामंजस्य की विभिन्न समस्याएं : सेवानिवृत्त महिलाओं के अभिमतों के अनुसार प्रत्युत्तर

क्रम	पारिवारिक–सामाजिक सामंजस्य की समस्याएं जिनकी अनुभूतियॉ वे करती हैं	सेवानिवृत्तों के अभिमत (आवृत्तियाँ/प्रतिषत)				योग (प्रतिषत)
		हाँ	नहीं	उदासीन	अनुत्तरित	
1	परिवार में उनकी दयनीय स्थिति तथा सत्ता का हस्तान्तरण हो जाना	360 ;90प्र00द्ध	12 ;03प्र00द्ध	28 ;07प्र00द्ध	.. ;00प्र00द्ध	400 ;100प्र00द्ध
2	परिवार में भौतिकतावादी व व्यक्ति वादी मूल्यों का प्रभाव अधिक होना	280 ;70प्र00द्ध	16 ;04प्र00द्ध	96 ;24प्र00द्ध	08 ;02प्र00द्ध	400 ;100प्र00द्ध
3	उनकी स्थिति कर्ता/मुखिया की न होकर आश्रित की हो जाना	260 ;65प्र00द्ध	76 ;19प्र00द्ध	40 ;10प्र00द्ध	24 ;06प्र00द्ध	400 ;100प्र00द्ध
4	सेवानिवृत्ति हो जाने से परिवार पर उनके प्रभाव में कमी आ जाना	264 ;66प्र00द्ध	.. ;00प्र00द्ध	32 ;08प्र00द्ध	104 ;26प्र00द्ध	400 ;100प्र00द्ध
5	नवीन विचारधाराओं से उनके विचारों का मेल न खाना	400 ;100प्र00द्ध	.. ;00प्र00द्ध	.. ;00प्र00द्ध	.. ;00प्र00द्ध	400 ;100प्र00द्ध
6	अपर्याप्त आय एवं उपेक्षित व आश्रित होने की अनुभूति करना	352 ;88प्र00द्ध	20 ;05प्र00द्ध	28 ;07प्र00द्ध	.. ;00प्र00द्ध	400 ;100प्र00द्ध
7	अपने लिए आवासीय सुविधाओं का अभाव अनुभव करना तथा असहाय हो जाना	236 ;59प्र00द्ध	92 ;23प्र00द्ध	66 ;16प्र50द्ध	06 ;01प्र50द्ध	400 ;100प्र00द्ध
8	उनकी दक्षता, बौद्धिकता एवं जीवन भर के अनुभवों की अनदेखी करना, परामर्ष तक न लेना, विचार विमर्ष न करना	132 ;33प्र00द्ध	268 ;67प्र00द्ध	.. ;00प्र00द्ध	.. ;00प्र00द्ध	400 ;100प्र00द्ध
9	सम्पत्ति के रखरखाव बर्वाद होने	245 ;61प्र25द्ध	80 ;20प्र00द्ध	75 ;18प्र75द्ध	.. ;00प्र00द्ध	400 ;100प्र00द्ध

	की चिन्ता सताए रहना, इत्यादि					

(नोटः कोश्ठकों के अन्तर्गत प्रदर्षित ऑकड़े प्रतिषतता प्रदर्षित करते हैं)

प्रसंगाधीन प्रस्तुत तालिका 5(14) के प्राथमिक तथ्यों के विष्लेशण से स्पश्ट है किः सेवानिवृत्त महिलाओं द्वारा पारिवारिक सामंजस्य न कर पाने तथा समायोजन करने में उत्पन्न विभिन्न तरह की समस्याएं एवं बाधाएं निम्नवत् हैं :–

(1) 360(90:) सेवानिवृत्तों का मानना है कि उनसे सत्ता का युवाओं व उनकी महिलाओं के हाथों में हस्तान्तरण हो जाने से परिवार में उनकी स्थिति (उपेक्षा के कारण) दयनीय हो गयी है।

(2) 280(70:) सेवानिवृत्तों का कहना है कि वर्तमान सन्दर्भों में परिवारों में भौतिकतावादी संस्कृति तथा व्यक्तिवादिता हाबी होने से परिवर्ती परिस्थितियों में उनका परिजनों के साथ समायोजन करना कठिन हो गया है।

(3) 260(65:) सेवानिवृत्तों ने यह स्वीकार किया है कि परिवार में उनकी स्थिति कर्ता/मुखिया की न होकर अब आश्रित जैसी हो गयी है। अतः मन मस्तिश्क में तनाव बना रहता है।

(4) 264(66:) सेवानिवृत्तों ने बताया कि सेवानिवृत्ति के बाद परिवार पर उनका प्रभाव कम हो गया है, परिजनों द्वारा उनकी उपेक्षा की जाती है, पारिवारिक अन्तःक्रियाओं में भी कमी आयी है। फलस्वरूप परिजनों तथा समाज के साथ उनके सम्बन्ध षिथिल हुए हैं, इस कारण परिजनों व बाहर के लोगों के सम्बन्धों में पहले जैसी रूचि, स्नेह तथा लगाव नहीं है। अब वे इस अवस्था में नीरस या फिर उदासीन/तटस्थ होकर जीवन जी रही हैं।

(5) षत प्रतिषत सेवानिवृत्तों ने यह स्वीकार किया है कि नवीन विचारधाराओं से उनकी (परम्परागत) विचारधाराओं का मेल नहीं खाता; जो पारस्परिक सामंजस्य में बहुत बड़ी बाधा है।

(6) 352(88:) सेवानिवृत्त महिलाओं का कहना है कि उनकी पेंषन (आय) नाकाफी होने से आवष्यकता पड़ने पर उन्हें परिजनों का मुँह ताकना पड़ता है; अतः वे स्वयं को आश्रित व उपेक्षित अनुभव करती हैं।

(7) 236(59:) सेवानिवृत्त महिलाओं का कहना है कि अपने रहने के लिए 'अपने ही घर में' आवास के अभाव की अनुभूति उन्हें सालती (खलती) है।

(8) 132(33:) सेवानिवृत्त महिलाओं ने बताया कि उनके परिजन (विषेशकर नई पीढ़ी के लोग) उनकी दक्षता, बौद्धिकता एवं अनुभवों की अनदेखी करना, परामर्ष तक न लेना, विचार–विमर्ष तक न करना, आपसी सामंजस्य में बाधक उत्तरदायी कारक हैं।

(9) 245(61.25:) सेवानिवृत्त महिलाओं ने बताया कि उन्हें भूमि, भवन, जायदाद के रख रखाव की चिन्ता सताए रहती हैं; भले ही उन्होंने परिवार तथा परिजनों के प्रति लगाव कम कर दिया है; जबकि उनका सम्पत्ति की सुरक्षा के प्रति लगाव बढ़ा है किन्तु परिजन उस पैतृक विरासत के प्रति बेखबर तथा बेसुध रहते हैं।

इस प्रकार उक्त आनुभविक तथ्यों के विष्लेशण के आलोक में स्पश्ट है कि **'सेवानिवृत्ति', सेवानिवृत्त महिलाओं के जीवन मार्ग में विभिन्न प्रकार की पारिवारिक–सामाजिक समस्याएं जनित करती है।**

अग्रॉकित तालिका 5(15) के प्राथमिक तथ्यों के विष्लेशण के प्रकाष में सुस्पश्ट है कि सेवानिवृत्त महिला न्यादर्षों के सम्मुख उपस्थित विभिन्न प्रकार की आर्थिक समस्याएं उनमें मानसिक तनाव जनित करती हैं। मानसिक तनाव जनित करने वाले विभिन्न कारणों तथा उनको स्वीकार करने सम्बन्धी अभिमतों के लिए (दृश्टब्यः तालिका 5(15) कालम 'हॉ')

तालिका नं0 5(15): आर्थिक समस्याएं तथा मानसिक तनाव सम्बन्धी विभिन्न उत्तरदायी कारण– सेवानिवृत्त महिलाओं के अभिमतों के अनुसार

क्रम	सेवानिवृत्तों में मानसिक तनाव सम्बन्धी उत्तरदायी कारण	सेवानिवृत्तों के अभिमत (आवृत्तियाँ/प्रतिषत)				योग (प्रतिषत)
		हाँ	नहीं	उदासीन	अनुत्तरित	
1	परिवार का खर्च (गुजारा) ठीक से नहीं चलता है	360 ;90ण्00द्ध	.. ;00ण्00द्ध	40 ;10ण्00द्ध	.. ;00ण्00द्ध	400 ;100ण्00द्ध
2	अर्थाभाव के कारण परिवार में प्रायः कलह होती है	282 ;70ण्50द्ध	.. ;00ण्00द्ध	106 ;26ण्50द्ध	12 ;03ण्00द्ध	400 ;100ण्00द्ध
3	अब काम धन्धा नहीं होता	264 ;66ण्00द्ध	28 ;07ण्00द्ध	108 ;27ण्00द्ध	.. ;00ण्00द्ध	400 ;100ण्00द्ध
4	सेवारत वाली आदतें अभी नहीं गयीं	368 ;92ण्00द्ध	.. ;00ण्00द्ध	32 ;32ण्00द्ध	.. ;00ण्00द्ध	400 ;100ण्00द्ध
5	पेंषन; परिवार के हिसाब से कम मिलती है, महिना पूरा नहीं हो पाता	400 ;100ण्00द्ध	.. ;00ण्00द्ध	.. ;00ण्00द्ध	.. ;00ण्00द्ध	400 ;100ण्00द्ध
6	खर्च की तुलना में आमदनी कम है स्वास्थ्य खराब रहता है; अतः परिजन क्लेश करते रहते हैं	304 ;76ण्00द्ध	18 ;04ण्50द्ध	40 ;10ण्00द्ध	38 ;09ण्50द्ध	400 ;100ण्00द्ध
7	अन्य कारणः आर्थिक समस्याएं, रोग ग्रस्तता, पारिवारिक क्लेश, परिजन पेंषन से अधिक पैसों अपेक्षाएं करते हैं आदि	280 ;70ण्00द्ध	84 ;21ण्00द्ध	24 ;06ण्00द्ध	12 ;03ण्00द्ध	400 ;100ण्00द्ध

निम्न तालिका नं. 5(6) सेवानिवृत्त महिलाओं की आर्थिक, स्वास्थ्य एवं षारीरिक तथा मनोरंजन व समय व्यतीत करने सम्बन्धी समस्याएं एवं उनके प्रति सभी 400 न्यादर्षित सेवानिवृत्त महिलाओं के अभिमतों पर संक्षिप्त प्रकाष डालती है–

तालिका नं0 5(16): सेवानिवृत्त महिलाओं की आर्थिक, षारीरिक व स्वास्थ्य तथा समय व्यतीत करने एवं मनोरंजन सम्बन्धी समस्याएं : सूचनादात्रीओं की अनुभूतियाँ (आवृत्ति/प्रतिषत)

क्रम	विभिन्न प्रकार की समस्याएं; जिन्हें सेवानिवृत्त महिलाएं अनुभव करती हैं	सूचनादात्रीओं की स्वीकारोक्तियाँ/अभिमत (आवृत्तियाँ/प्रतिषत)				योग (प्रतिषत)
		हाँ	नहीं	उदासीन	अनुत्तरित	
1	**आर्थिक :**					
	रोजगार का अभाव	280 ;70ण्00द्ध	56 ;14ण्00द्ध	64 ;16ण्00द्ध	.. ;00ण्00द्ध	400 ;100ण्00द्ध
	अर्थाभाव	364 ;91ण्00द्ध	20 ;05ण्00द्ध	12 ;03ण्00द्ध	04 ;01ण्00द्ध	400 ;100ण्00द्ध
	पराश्रितता अनुभव करना	260 ;65ण्00द्ध	88 ;22ण्00द्ध	46 ;11ण्50द्ध	06 ;01ण्50द्ध	400 ;100ण्00द्ध
	आर्थिक सहायता करने वाला कोई न होना	292 ;73ण्00द्ध	24 ;06ण्00द्ध	84 ;21ण्00द्ध	.. ;00ण्00द्ध	400 ;100ण्00द्ध
2	**षारीरिक तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी :**					
	स्वास्थ्य में गिरावट/असहाय होना	360 ;90ण्00द्ध	.. ;00ण्00द्ध	104 ;26ण्00द्ध	36 ;09ण्00द्ध	400 ;100ण्00द्ध
	रोग ग्रस्तता व उपचार सम्बन्धी	252 ;63ण्00द्ध	12 ;03ण्00द्ध	128 ;32ण्00द्ध	08 ;02ण्00द्ध	400 ;100ण्00द्ध
	गम्भीर रोग/बीमारियाँ	212 ;53ण्00द्ध	156 ;39ण्00द्ध	132 ;33ण्00द्ध	.. ;00ण्00द्ध	400 ;100ण्00द्ध
	अषक्तता तथा पोशणीय समस्याएं	280 ;70ण्00द्ध	36 ;09ण्00द्ध	80 ;20ण्00द्ध	04 ;01ण्00द्ध	400 ;100ण्00द्ध
	पर्यावरणीय समस्याएं	308 ;77ण्00द्ध	18 ;04ण्50द्ध	74 ;18ण्50द्ध	.. ;00ण्00द्ध	400 ;100ण्00द्ध
3	**समय व्यतीत करने एवं मनोरंजन सम्बन्धी :**					
	समय व्यतीत करने सम्बन्धी समस्या	360 ;90ण्00द्ध	.. ;00ण्00द्ध	40 ;10ण्00द्ध	.. ;00ण्00द्ध	400 ;100ण्00द्ध
	एकान्त की अनुभूति	256 ;64ण्00द्ध	76 ;19ण्00द्ध	59 ;14ण्75द्ध	09 ;02ण्25द्ध	400 ;100ण्00द्ध
	मनोरंजन के लिए चिन्तित रहना	276 ;69ण्00द्ध	30 ;07ण्50द्ध	82 ;20ण्50द्ध	12 ;03ण्00द्ध	400 ;100ण्00द्ध
	उपेक्षित अनुभव करना	236 ;59ण्00द्ध	28 ;07ण्00द्ध	116 ;29ण्00द्ध	20 ;05ण्00द्ध	400 ;100ण्00द्ध
	अकेलापन तथा अनावष्यकता की भावना अनुभव करना	240 ;60ण्00द्ध	92 ;23ण्00द्ध	68 ;17ण्00द्ध	.. ;00ण्00द्ध	400 ;100ण्00द्ध

(नोटः कोश्ठकों के अन्तर्गत प्रदर्षित ऑकड़े प्रतिषतता प्रदर्षित करते हैं)

प्रसंगाधीन प्रस्तुत तालिका 5(16) के आनुभविक तथ्यों के विष्लेशण से स्पश्ट है कि अधिकांषत सेवानिवृत्त महिलाएं, सेवानिवृत्ति के पष्चात् से षारीरिक, स्वास्थ्य, समय व्यतीत करने, मनोरंजन तथा आर्थिक समस्याओं की अनुभूतियॉ करती हैं। सूचनादात्रीओं की स्वीकारोक्तियॉ तथा

भॉति–भॉति की समस्याओं (जिनकी अनुभूतियॉ वे करती हैं) के लिए दृश्टब्य तालिका नं. 5(16) तथा तालिका 5(16) का कॉलम 'हॉ'।

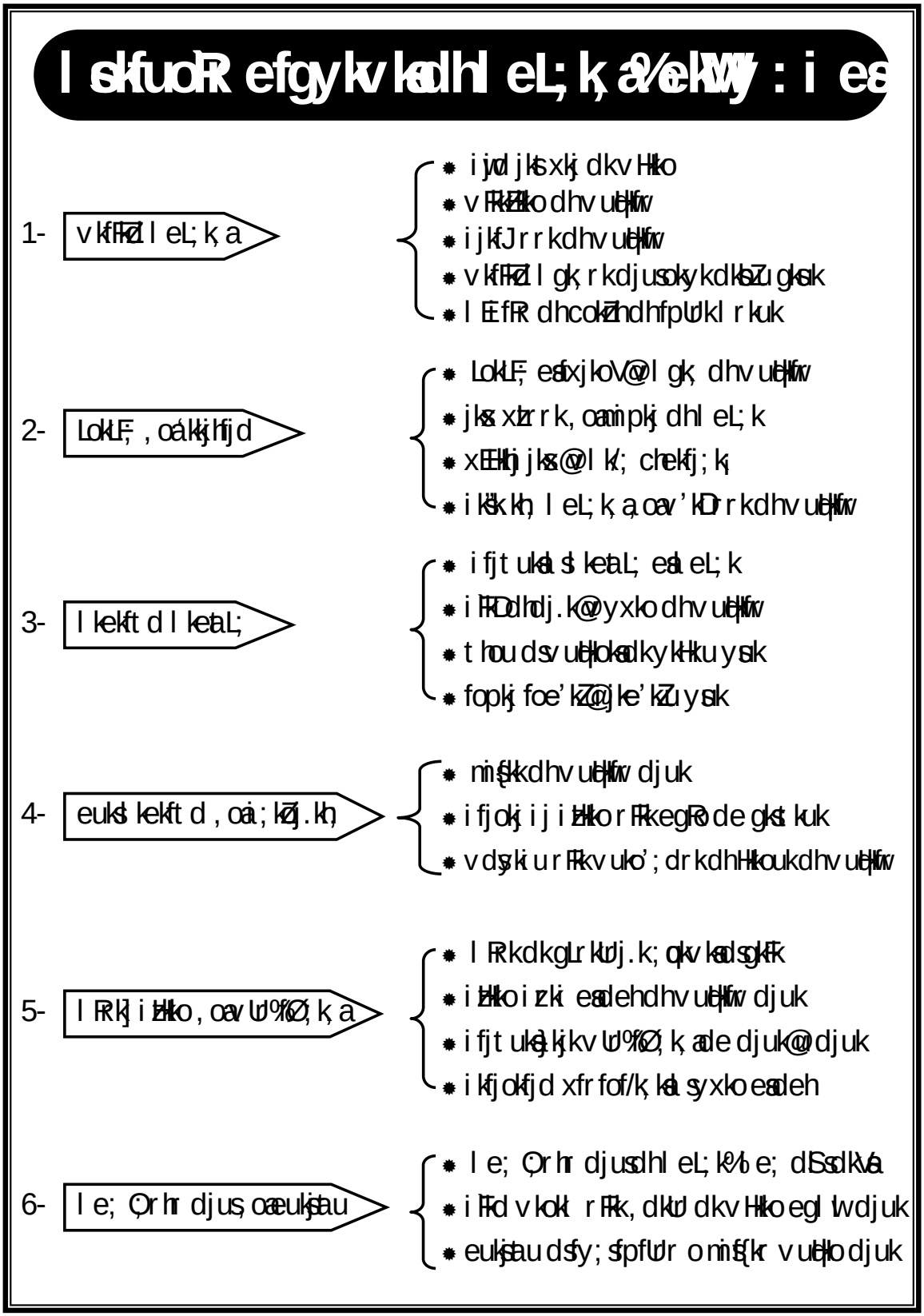

षोधार्थिनी ने सेवानिवृत्त महिला न्यादर्षों की मनो–सामाजिक समस्याओं के सम्बन्ध में भी व्यक्तिगत साक्षात्कारों द्वारा जानकारी हासिल करने का प्रयास किया है। सभी 400 सेवानिवृत्त महिला न्यादर्षों के व्यक्तिगत साक्षात्कारों से प्राप्त प्राथमिक जानकारियों पर निम्न तालिका 5(17) संक्षिप्त प्रकाष डालती है–

तालिका नं0 5(17): सेवानिवृत्त महिलाओं द्वारा मनो–सामाजिक समस्याओं की अनुभूतियाँ/स्वीकारोक्तियाँ

क्रम	सम्बन्धित प्रष्न जो सेवानिवृत्त महिलाओं से जानकारी प्राप्त करने के लिए किए गए	सूचनादात्रीओं की स्वीकारोक्तियाँ/अभिमत (आवृत्तियाँ/प्रतिषत)				योग (प्रतिषत)
		हाँ	नहीं	उदासीन	अनुत्तरित	
1	क्या सेवानिवृत्ति के पष्चात् आपकी आदतों में कोई अन्तर आया है?	160 ;40प्र00द्ध	216 ;54प्र00द्ध	24 ;06प्र00द्ध	.. ;00प्र00द्ध	400 ;100प्र00द्ध
2	क्या आप खान–पान के सम्बन्ध में समस्याओं की अनुभूति करती हैं?	224 ;56प्र00द्ध	90 ;22प्र50द्ध	74 ;18प्र50द्ध	12 ;03प्र00द्ध	400 ;100प्र00द्ध
3	क्या आप अपने दैनिक जीवन में अनुषासन सम्बन्धी समस्या की अनुभूति करती हैं?	244 ;61प्र00द्ध	60 ;15प्र00द्ध	91 ;22प्र75द्ध	05 ;01प्र25द्ध	400 ;100प्र00द्ध
4	क्या आप समुदाय के व्यक्तियों के साथ सामंजस्य स्थापित करने में कठिनाई का अनुभव करती हैं?	324 ;81प्र00द्ध	.. ;00प्र00द्ध	76 ;19प्र00द्ध	.. ;00प्र00द्ध	400 ;100प्र00द्ध
5	क्या आप कभी संवेगात्मक भावनाओं कोषिकार तो नहीं हो जातीं?	200 ;50प्र00द्ध	88 ;22प्र00द्ध	104 ;26प्र00द्ध	08 ;02प्र00द्ध	400 ;100प्र00द्ध
6	आपके आत्म सम्मान सम्बन्धी धारणा में कोई फर्क तो नहीं आया है?	.. ;00प्र00द्ध	384 ;96प्र00द्ध	16 ;04प्र00द्ध	.. ;00प्र00द्ध	400 ;100प्र00द्ध

प्रस्तुत तालिका नं. 5(17) सेवानिवृत्त महिलाओं द्वारा अनुभूत मनो–सामाजिक समस्याओं सम्बन्धी विभिन्न पहलुओं के सन्दर्भ में अध्ययन की गयी सभी 400 न्यादर्षों के व्यक्तिगत साक्षात्कारों से प्राप्त प्राथमिक ऑकड़ों के विष्लेशण से स्पश्ट है कि–

(1) 160(40:) सेवानिवृत्त महिला सूचनादात्रीओं ने यह स्वीकार किया है कि सेवानिवृत्ति के पष्चात् भी उनके सेवानिवृत्त जीवन व आदतों में कोई अन्तर (परिवर्तन) नहीं हुआ है जबकि वे सेवानिवृत्त हो गयी हैं इसलिए वे स्वयं सार्वजनिक जीवन में मनो–सामाजिक समस्याओं की अनुभूतियॉ करती हैं।

(2) 224(56:) सेवानिवृत्त महिलाओं ने यह स्वीकार किया है कि वे खान–पान सम्बन्धी समस्याओं की अनुभूति करती हैं।

(3) 244(61:) सेवानिवृत्त महिलाओं ने यह स्वीकारोक्तियॉ की हैं कि वे अपने पारिवारिक जीवन में अनुषासन सम्बन्धी समस्या की अनुभूतियॉ करती हैं क्योंकि परिजन न उनका कहना मानते हैं और अनुषासन में नहीं रहते। क्योंकि सेवानिवृत्ति से उनके प्रभाव में काफी कमी आयी है।

(4) 324(81:) महिला सूचनादात्रियॉ (सेवानिवृत्ति के पष्चात्) समुदाय के व्यक्तियों के साथ सामंजस्य स्थापित करने में विभिन्न प्रकार की कठिनाईयों का अनुभव करती हैं क्योंकि उनकी नौकरी/सेवारत के समय की आदतें नहीं गयी हैं।

(5) 200(50:) सेवानिवृत्त महिलाओं ने यह स्वीकार किया है कि वे कभी–कभी परिजनों तथा समुदाय के लोगों के साथ संवेगात्मक भावनाओं की षिकार हो जाती हैं, लेकिन फिर भी संयम व धैर्य बरतती हैं जिसे परिजन तथा समुदाय के लोग बुरा मानते हैं।

(6) 384(96:) सेवानिवृत्त महिलाओं की मान्यता है कि सेवानिवृत्त हो जाने पर भी राश्ट्र के प्रति उनके सोच में अभी कोई बदलाव नहीं आया है; और न ही आयेगा, वे राश्ट्र हित में काम करती थीं। राश्ट्र व राश्ट्रीयता का वे पूर्णरूपेण तहेदिल सम्मान करती हैं; और जीवनपर्यन्त सम्मान करती रहेंगी।

KKKKKK

सन्दर्भ–सूची

1. सिलावट सुधा एस; (1995) वृद्धजनों की समस्याएं; प्रकाषित षोध लेख ''सामाजिक सहयोग'' राश्ट्रीय त्रैमासिक शोध पत्रिका, वर्श–4 अंक–14, श्रीकृश्ण षोध संस्थान, उज्जैन (म.प्र.), पृ. 11–17

2. अग्रवाल मनोहर ; (1990) सामान्य एवं सेवानिवृत्त; एक विष्लेशण, प्रकाषित षोधपत्र, ''जन सहयोग'' राश्ट्रीय षोध पत्रिका, डॉ. भीमराव अम्बेडकर राश्ट्रीय षोध संस्थान (विष्वविद्यालय), औरंगाबाद, पृश्ठ 20–23

3. .....; (1977) इन्स्टीट्यूट ऑफ सोसल वर्क 'सर्वेक्षण दल–प्रतिवेदन' नई दिल्ली, पृश्ठांकन 124–125

4. पटेल षिर्षा ; (2000) ''बदलते परिवेष में संयुक्त परिवार एवं सामाजिक षक्तियाँ– एफ.डी. पब्लिकेसन्स एण्ड बुक सेन्टर (प्रा.लिमि.), प्रथम संस्करण, नई दिल्ली 1999–2000, पृ.53

5. बन्दना रानी ; (1999) बृद्धजनों की पारिवारिक स्थिति; सामाजिक विज्ञानों की अर्द्धवार्शिक षोध पत्रिका, ''राधा कमल मुकर्जी चिन्तन परम्परा'', समाज विज्ञान विकास षोध संस्थान, चॉदपुर स्याऊ, बिजनौर (उ.प्र.), वर्श–1, अंक–1 जनवरी जून 1999, पृ. 67–71

6. गोयल सुनील ; (1997) ''प्रॉबलम्स ऑफ दि ट्राइबल एज्डः नीड टू इन्टीग्रेट दैम इन्टू दि फैमिली'' प्रकाषित षोधपत्र, राश्ट्रीय त्रैमासिक षोध पत्रिका 'सामाजिक सहयोग' श्रीकृश्ण षोध संस्थान, उज्जैन (म.प्र.), वॉल्यूम 26(6), जनवरी–अप्रैल 1997, पृश्ठ 45

KKKKKK